पाठ :१०

दोहे

STUDY NOTES

MIND MAP

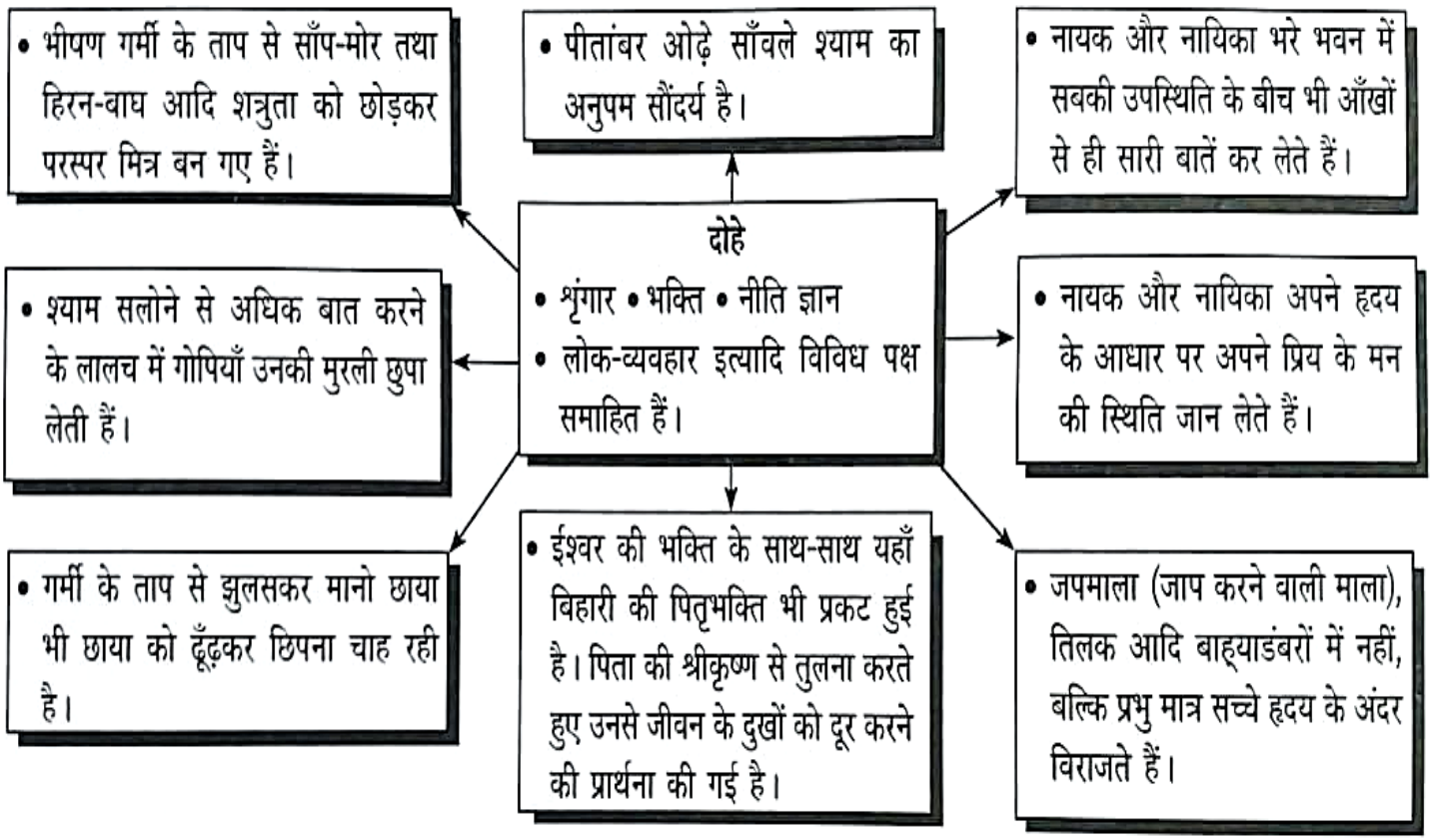

पाठ :१०

दोहे

STUDY NOTES

पाठ प्रवेश

मांजी,पौंछी,चमकाइ ,युत -प्रतिभा जतन अनेक।
दीरघ जीवन ,विविध सुख ,रची 'सतसई ' एक।।

अर्थात मांज कर ,पौंछ कर और चमका कर अनेक प्रयास करने के बाद ऐसी प्रतिभा सामने आइ हैं ,लंबा जीवन, अनेक सुख वाले बिहारी ने एक ग्रंथ 'बिहारी सतसई 'की रचना की। 'बिहारी सतसई 'में सात सौ दोहे हैं। दोहा जैसे छोटे से छंद में गहरे अर्थों को कहने के कारण कहा जाता है कि बिहारी थोड़े शब्दों में बहुत कुछ कहने में माहिर थे। उनके दोहों के अर्थों की गंभीरता को देखकर कहा जाता है कि

सतसैया के दोहरे ,ज्यों नावक के तीर।
देखन में छोटे लगै ,घाव करें गंभीर।।

अर्थात सतसई के दोहे ऐसे हैं जैसे किसी मधुमक्खी का डंक ,जो देखने में तो छोटा लगता है लेकिन घाव बहुत गहरा देता है।

बिहारी की भाषा ब्रज भाषा है। सतसई में मुख्यतः प्रेम और भक्ति को दर्शाने वाले दोहे हैं। बिहारी मुख्य रूप से श्रृंगार रस के लिए जाने जाते हैं। इस पाठ में बिहारी के कुछ दोहे दिए जा रहे हैं। इन दोहों में श्रृंगार के साथ - साथ लोक - व्यवहार , नीति ज्ञान आदि विषयों का वर्णन भी किया गया है। इन दोहों से आपको भी ज्ञात होगा कि बिहारी कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक अर्थ भरने की कला भली भांति जानते हैं।

संबंधित प्रश्न –

१.बिहारी ने किस ग्रंथ की रचना की थी?
२. उनके दोहों के बारे में क्या कहा गया है ?
३. बिहारी की भाषा क्या है?
४. बिहारी मुख्यतः किस रस के लिए जाने जाते हैं?
५. बिहारी ने किन - किन विषयों का भी वर्णन किया है?

सामान्य उद्देश्य –

हमें वाह्य आडंबर को छोड़कर सच्चे मन से ईश्वर की भक्ति करनी चाहिए। इनके दोहें नीतिपूर्ण होते हैं, जो हमें समाज में व्यवहार करना सिखाते हैं

विशिष्ट उद्देश्य –

श्रृंगार के अतिरिक्त नीति तथा भक्ति भावना संबंधित व्यवहार करना सिखाते हैं

पाठ का सार

प्रस्तुत दोहे कवि बिहारी द्वारा रचित ग्रन्थ 'बिहारी सतसई 'से लिए गए हैं। इसमें कवि ने भक्ति ,नीति व् श्रृंगार भाव का सुन्दर मेल प्रस्तुत किया है। पहले दोहे में कवि कहते हैं कि श्री कृष्ण के नीलमणि रूपी साँवले शरीर पर पीले वस्त्र रूपी धूप अत्यधिक शोभित हो रही है। दूसरे दोहे में कवि भयंकर गर्मी का वर्णन करते हुए कहते हैं कि गर्मी के कारण जंगल तपोवन बन गया है जहाँ सभी जानवर आपसी द्वेष भुलाकर एक साथ बैठे हैं। तीसरे दोहे में कवि गोपियों की श्री कृष्ण के साथ बात करने की उत्सुकता को प्रकट करते हैं और कहते हैं कि गोपियों ने श्री कृष्ण की बाँसुरी को चुरा लिया है। चौथे दोहे में कवि नायक और नायिका द्वारा भीड़ में भी किस तरह आँखों ही आँखों में बात की जाती है इस बात का वर्णन करते हैं। पांचवें दोहे में कवि जून के महीने की भीषण गर्मी का वर्णन करते हुए कहते हैं कि गर्मी इतनी अधिक बढ़ गई है कि छाया भी छाया ढूंढ़ने के लिए घने जंगलों व घरों में छिप गई है। छठे दोहे में कवि कहते हैं कि नायिका नायक को सन्देश भेजना चाहती है परन्तु अपनी विरह दशा का वर्णन कागज़ पर नहीं कर पा रही है न ही किसी को बता पा रही है वह चाहती है कि नायक उसकी विरह दशा का अनुमान स्वयं लगाए। सातवें दोहे में कवि श्री कृष्ण से कहते हैं कि आप चन्द्र वंश में पैदा हुए हो और स्वयं ब्रज आये हो। कवि श्री कृष्ण की तुलना अपने पिता से कर रहे हैं और कहते हैं कि आप मेरे पिता के समान हैं ,अतः मेरे सारे कष्ट नष्ट कर दो। अंतिम दोहे में कवि आडंबर से बचने व ईश्वर की सच्ची भक्ति करने को कहते हैं और बताते हैं कि सच्ची भक्ति से ही ईश्वर प्रसन्न होते हैं।